E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 18-10-2024
Accepted: 24-11-2024
Published: 08-01-2025

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 1; 2025; Page No. 402-408

उपनिषदों की नैतिकता, और भक्ति आंदोलन के प्रभाव, और आधुनिक हिंदू विचार में नैतिक रुझान

[1]Rani Yadav and [2]Dr. Vijay Narayan Tiwari

[1]Research Scholar, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India
[2]Professor, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20158028

Corresponding Author: Rani Yadav

सारांश

विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति, धार्मिक ज्ञान और शुद्धि कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो उपनिषदों की शिक्षाओं और भगवद-गीता की शिक्षाओं से लाभान्वित हुए हैं, जिनकी गुणात्मक दृष्टि से जांच की गई है। दुनिया की वैज्ञानिक समझ और आध्यात्मिक ज्ञान दोनों का पता वेदों और उपनिषदों से लगाया जा सकता है, जैसा कि यह शोध स्पष्ट रूप से स्पष्ट करता है। उपनिषदों के अनुसार, मनुष्य को तब तक पुनर्जन्म का अनुभव करना है जब तक कि वे मोक्ष प्राप्त नहीं कर लेते, या जन्म, मृत्यु और अज्ञानता के चक्र से अंतिम रूप से मुक्त नहीं हो जाते। भगवद-गीता से प्रेरणा पाने वाले हिंदुओं द्वारा अपनाए गए सिद्धांत आम लोगों को आध्यात्मिक रूप से पूर्ण अस्तित्व के साधन के रूप में सद्गुण और ज्ञान के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। धर्म का अध्ययन करने का एक प्रमुख और अपरिहार्य घटक नैतिकता है। व्यक्तियों में नैतिक चरित्र का विकास और निर्माण करना धार्मिक शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है। धार्मिक शिक्षाएँ हमेशा नैतिक मानकों का संकेत देती हैं, लेकिन नैतिकता के बारे में सभी कथनों या कथनों का धार्मिक आधार नहीं होता है। जबकि धार्मिक शिक्षाएँ धर्मों के अधिकार या धार्मिक सिद्धांतों पर जोर देती हैं, सामाजिक, सौंदर्य, बौद्धिक और नैतिक मूल्य सभी नैतिकता का हिस्सा हैं। धार्मिक शिक्षा के ढांचे के भीतर नैतिक घोषणाओं, जिम्मेदारियों, कर्तव्यों, निषेधों और अनुमति के कार्य को समझने के लिए, यह शोध नैतिक दृष्टिकोण (उद्देश्य और व्यक्तिपरक) को विकसित और विकसित करता है। क्या धार्मिक विश्वास प्रणालियों और नैतिक सिद्धांतों के बीच कोई सामंजस्य है? यही वह अध्ययन मुद्दा है जिसे इस विश्लेषणात्मक तकनीक का लक्ष्य हल करना है। स्वतंत्र इच्छा की अवधारणा धार्मिक सिद्धांत की पवित्रता से कैसे संबंधित है? धार्मिक मतभेद से उत्पन्न विवादों की मध्यस्थता में लागू नैतिक संवादों की भूमिका। अध्ययन धर्म और नैतिकता के बीच संबंध का वर्णन करने के लिए सैद्धांतिक आधार तैयार करता है। हालाँकि, शोध का निष्कर्ष है कि धार्मिक अधिकार नैतिकता से अधिक आधिकारिक है। इस शोध का आधार यह है कि धार्मिक ग्रंथों में नैतिक सिद्धांत पाए जा सकते हैं। इस विश्लेषणात्मक शोध में विभिन्न धार्मिक विचारों की धार्मिक मूल्यों की सापेक्षता का आगे वर्णन और मूल्यांकन किया गया है। धार्मिक शिक्षाओं को स्पष्ट करने और समझने के लिए, यह अन्य दार्शनिकों और नैतिक सिद्धांतों की राय भी प्रस्तुत करता है।

मूल शब्दः भाषा, सांस्कृतिक पहचान, शैक्षिक नीतियां, पारंपरिक ज्ञान, शास्त्र।

प्रस्तावना

संस्कृत संस्कृति के मूल में हजारों वर्षों से चली आ रही साहित्यिक परंपरा है, जो संस्कृत भाषा के गहन छंदों और आख्यानों में समाहित ज्ञान का खजाना है। संस्कृत संस्कृति की साहित्यिक विरासत केवल चर्मपत्र पर लिखे शब्दों से आगे तक फैली हुई है; यह प्राचीन भारतीय सभ्यता की बौद्धिक तीक्ष्णता, सांस्कृतिक समृद्धि और कालातीत अंतर्दृष्टि का प्रमाण है। हिंदू धर्म के सबसे पुराने पवित्र ग्रंथ माने जाने वाले वेद संस्कृत साहित्य के आधारभूत स्तंभ हैं। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद से मिलकर बने ये शास्त्र केवल धार्मिक भजनों के भंडार नहीं हैं, बल्कि जटिल रचनाएँ हैं जो देवत्व, ब्रह्मांड और अस्तित्व के सार की प्रकृति का पता लगाती हैं।

वैदिक भजनों की काव्यात्मक सुंदरता और लयबद्ध परिशुद्धता अद्वितीय है, जो गहन आध्यात्मिक अवधारणाओं को व्यक्त करने में संस्कृत भाषा की महारत को प्रदर्शित करती है। उपनिषद, जिन्हें अक्सर वेदांत या वैदिक ज्ञान की परिणति के रूप में संदर्भित किया जाता है, दर्शन की गहराई में उतरते हैं। ये ग्रंथ वास्तविकता, चेतना और परम सत्य (ब्रह्म) की प्रकृति का पता लगाते हैं। ऋषियों और साधकों के बीच संवादों के माध्यम से, उपनिषद कालातीत ज्ञान प्रदान करते हैं, सभी प्राणियों के परस्पर संबंध और आत्म-साक्षात्कार की खोज पर जोर देते हैं। छांदोग्य और बृहदारण्यक उपनिषद, अन्य के अलावा, दार्शनिक विचारों की विशाल इमारतों के रूप में खड़े हैं।

महाभारत और रामायण महाकाव्य, ऐसी महान साहित्यिक

उपलब्धियाँ हैं जो समय की सीमाओं से परे हैं। क्रमशः ऋषि व्यास और वाल्मीकि को समर्पित ये महाकाव्य केवल वीरतापूर्ण कारनामों की कथाएँ नहीं हैं, बल्कि धर्म (धार्मिक कर्तव्य), नैतिकता और मानवीय रिश्तों की जटिल ताने-बाने पर गहन ग्रंथ हैं। महाभारत के भीतर एक दार्शनिक प्रवचन भगवद गीता, जीवन की दुविधाओं और आत्म-साक्षात्कार के मार्ग को संबोधित करते हुए एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है।

शास्त्रीय संस्कृत नाटक, विशेष रूप से कालिदास और बहासा की रचनाएँ, संस्कृत नाट्य साहित्य की परिष्कृतता को प्रदर्शित करती हैं। कालिदास की "शकुंतला" दार्शनिक आधार वाली एक मार्मिक प्रेम कहानी है, जो प्रेम, वियोग और जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति के विषयों की खोज करती है। बहासा के नाटक, हालांकि ऐतिहासिक कारणों से कम संख्या में हैं, मानव मनोविज्ञान और सामाजिक गतिशीलता की सूक्ष्म समझ प्रदर्शित करते हैं। संस्कृत काव्य, अपने जटिल छंदों और विशद कल्पना के साथ, कालिदास, भारवि और माघ जैसे प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं में प्रसिद्ध है।

संस्कृत छंदों की सौन्दर्यात्मक सुंदरता गहन विचारों की अभिव्यक्ति में कलात्मक परिष्कार की एक परत जोड़ती है। संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान सांस्कृतिक और लौकिक सीमाओं से परे है। यह मानवीय स्थिति, नैतिक दुविधाओं और सत्य की शाश्वत खोज में अंतर्दृष्टि का एक कालातीत भंडार प्रदान करता है। जब कोई संस्कृत संस्कृति के साहित्यिक खजाने में तल्लीन होता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इसका भाग्य न केवल अतीत को संरक्षित करने में निहित है, बल्कि उन लोगों के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन का एक शाश्वत स्रोत प्रदान करने में भी निहित है जो ज्ञान और अनुग्रह के साथ जीवन की जटिलताओं को नेविगेट करना चाहते हैं। संस्कृत संस्कृति मानवता को गहन गहराई और विविधता की दार्शनिक विरासत देती है, जो बौद्धिक कौशल और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का प्रमाण है जिसने सहस्राब्दियों से भारतीय उपमहाद्वीप को आकार दिया है। प्राचीन ग्रंथों और विचारधाराओं में निहित, संस्कृत संस्कृति का दार्शनिक परिदृश्य विचारों की एक समृद्ध ताने-बाने को समेटे हुए है, जिनमें से प्रत्येक अस्तित्व, चेतना और वास्तविकता की प्रकृति को समझने में योगदान देता है। भारतीय दर्शन के शास्त्रीय स्कूल, जिन्हें दर्शन के रूप में जाना जाता है, जीवन के मूलभूत प्रश्नों पर अलग-अलग दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

संस्कृत के दो शब्दों "वेद" (ज्ञान) और "अंत" (अंत) से बना वेदांत सबसे प्रभावशाली स्कूलों में से एक है। यह उपनिषदों में पाई जाने वाली शिक्षाओं की खोज करता है और परम वास्तविकता (ब्रह्म) और व्यक्तिगत आत्मा (आत्मा) को अविभाज्य के रूप में व्याख्या करता है। आदि शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैत वेदांत अस्तित्व की अद्वैत प्रकृति पर जोर देता है, और जोर देता है कि दुनिया में स्पष्ट विविधता एक भ्रम है।

रामायण मानवीय रिश्तों का उत्सव है जबकि महाभारत जीवन को उसकी कठोर और नग्न वास्तविकताओं में प्रस्तुत करता है जो दोषों और मूर्खताओं, चालों और रणनीतियों, प्रलोभनों और षड्यंत्रों, स्वार्थ और बलिदान से भरा है। दोनों महाकाव्य हर युग और समय के लिए प्रासंगिक हैं। एस राधाकृष्णन का मानना है कि इन दो महान महाकाव्यों की भावना ने भारतीय आत्मा को सर्वोच्च आत्मा के प्रति प्रेम से भर दिया है। वे भारतीय जीवन शैली और परिवार प्रणाली और समाज के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये महाकाव्य प्राचीन भारतीय संस्कृति और परंपराओं का एक सिंहावलोकन प्रस्तुत करते हैं जिन्हें आज भी भारतीय आगे बढ़ा रहे हैं। वे हमें कठिन समय में मानसिक शक्ति और संतुलन प्रदान करते हैं। धर्म हमेशा से भारतीयों की जीवन शक्ति रहा है।

धर्म और धर्म के प्रति दृष्टिकोण कथा साहित्य में एक मजबूत कड़ी रहा है, क्योंकि धर्म जीवन के हर क्षेत्र में घुसपैठ करता है: शिक्षा, पूजा, अनुष्ठान, जन्म, विवाह और मृत्यु, साथ ही कार्यस्थल, सामाजिक व्यवस्था और जातिगत दृष्टिकोण। यह दार्शनिक मान्यताओं में भी परिलक्षित होता है और इस प्रकार व्यक्तिगत, पारस्परिक और सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र को शामिल करता है। धर्म और आस्था के बारे में अक्सर अन्य संस्कृतियों में लिखा गया है, लेकिन भारतीय लेखन में इसने एक राजनीतिक अर्थ प्राप्त कर लिया है और यह व्यक्ति और उसके ईश्वर के बीच के रिश्ते से कहीं अधिक है।

भारतीय उपन्यास में ऐतिहासिक चेतना भी धार्मिक है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में प्रारंभिक उपन्यास ने इतिहास की खोज और राष्ट्रीय पहचान की खोज में इसे धार्मिक संदर्भ में रखा। कई काल्पनिक कृतियों में धर्म बहुत मौजूद है। पिछली दो शताब्दियों के दौरान भारत में लिखा गया साहित्य इंग्लैंड और भारत के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के संगम को दर्शाता है।

साहित्य की समीक्षा

मित्रा, धीरज. (2025) [2]। यह आलेख भारतीय हिन्दू ज्ञान परंपरा और उसके स्रोतों पर केंद्रित है, जो उपनिषद, स्मृति और पुराण, महाकाव्य आदि धार्मिक शास्त्रों में वर्णित मूल्यों के रूप में हैं। हिन्दू ज्ञान प्रणाली में मूल्य और मानवीय नैतिकता: समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य जो मानव जीवन के जैविक, सामाजिक और आध्यात्मिक आयामों को लक्षित करते हैं और उन्हें मानवीय नैतिकता के रूप में दिशा देते हैं। यह वर्तमान समय में मानव जीवन को अधिक सुखी और संघर्ष-मुक्त बनाने के लिए मानव व्यवहार को निर्धारित करने वाली मूल्यों की प्रणाली की व्यवहार्यता और आवश्यकता को समझने का एक प्रयास है। इसके अंतर्गत हिन्दू ज्ञान परंपरा के उन मूल्यों की चर्चा की गई है जो आंतरिक गुण होते हुए भी समाजीकरण की प्रक्रिया से ही फलते-फूलते हैं। बताया गया है कि किस प्रकार समाजीकरण की इस पूरी प्रक्रिया में परंपराओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है जिसमें परंपराओं की मदद से आंतरिक मानवीय गुणों को मूल्यों के रूप में दृश्यमान बनाया जाता है। मानवीय नैतिकता जो सर्वव्यापी है, लेकिन किस प्रकार स्थान-विशेष के मूल्यों में अंतर के कारण उत्पन्न होने वाले अंतर मानवीय नैतिकता को प्रभावित करते हैं जिसके कारण व्यक्ति के व्यक्तित्व में बड़े बदलाव आते हैं, इसकी समीक्षा की गई है। डॉ. राधा कमल मुखर्जी मूल्यों को जीवित सामाजिक तथ्य मानते हुए उनकी प्रकृति को सार्वभौमिक बताती हैं तथा साथ ही स्थान विशेष के अनुसार उनकी प्रकृति में दिखाई देने वाले अंतरों की ओर भी ध्यान आकर्षित करती हैं। मूल्यों की प्रकृति में अंतर के कारण मानवीय नैतिकता के प्रमुख तत्वों जैसे करुणा, प्रेम, सहयोग, सहिष्णुता आदि के स्तर में भी अंतर होता है।

यादव, आशीष कुमार आदि। (2024) [3]। भारत अपनी प्राचीन परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ, समय की शुरुआत से ही अनेक धर्म पनपे हैं। धर्मशास्त्र और दार्शनिक विचार नैतिकता की जड़ हैं। वेदों, उपनिषदों और महाकाव्यों की उत्पत्ति से, नैतिकता इन सभी विभिन्न धार्मिक प्रणालियों का आधार है। इन मूलों से निकले लोगों के नैतिक कोड, उनके सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन के तरीकों का संकेत हैं। वे उपदेश देते हैं कि इस दुनिया के सुख और दुख का अनुभव करना मानव जीवन का वास्तविक मूल है। जिस तरह से हर इंसान अपने कर्तव्यों का पालन करते समय बाधाओं का सामना करता है, उसी तरह अर्जुन को भी इस

सार्वभौमिक समस्या का सामना करना पड़ा। जब गीता ने मानव जीवन के ज्ञान और व्यावहारिक महत्व के बारे में सिखाया और दुष्ट समाज को हराने के लिए युद्ध के मैदान पर वास्तविक कार्रवाई का पालन करने का निर्देश दिया, तो भगवान कृष्ण द्वारा उपदेशित गीता को सुनने के बाद अर्जुन अपने संज्ञानात्मक दोषों को हल करने में सक्षम हो गया। ये मानक मनोचिकित्सा को भी रेखांकित करते हैं। महाकाव्य रामायण सामाजिक मूल्य और मानव मूल्य के बीच अंतर करता है। रामायण राम के साहसिक कार्य का नाम है। हालाँकि बुराई पर पुण्य की विजय रामायण का मुख्य विषय है, लेकिन महाकाव्य राम की धार्मिकता और कठिन और भाग्यशाली परिस्थितियों में धैर्य (या सहनशीलता) से रंगा हुआ है।

पटेल, पीयूष एट अल. (2025) [4]। यह अध्ययन ऋषि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में निहित मौलिक मानवीय मूल्यों का विश्लेषण करता है। एक दिव्य कथा से कहीं अधिक, रामायण एक नैतिक मार्गदर्शक है, जो नैतिक व्यवहार और सामाजिक सद्भाव को आकार देती है। शोध का उद्देश्य प्रमुख पात्रों के माध्यम से धर्म (कर्तव्य), सत्य (सत्य), करुणा (करुणा) और सेवा (निस्वार्थ सेवा) जैसे मूल्यों के चित्रण और नैतिक आचरण पर उनके प्रभाव की जांच करना है। गुणात्मक दृष्टिकोण में पाठ विश्लेषण, सांस्कृतिक व्याख्या और दार्शनिक जांच शामिल है। अध्ययन में पता लगाया गया है कि राम, सीता, लक्ष्मण और रावण जैसे पात्र किस तरह से धार्मिकता, भक्ति, त्याग और लचीलेपन जैसे गुणों का उदाहरण देते हैं। निष्कर्ष व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षिक संदर्भों में इन मूल्यों की कालातीत प्रासंगिकता को उजागर करते हैं, चरित्र विकास और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देते हैं। रामायण का नैतिक ढांचा पीढ़ियों तक नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करता है, समकालीन जीवन में सद्गुण के महत्व पर जोर देता है।

ढांड, आरती (2002) [5]। यह शोधपत्र छह भागों में विभाजित है। पहला भाग पश्चिमी दार्शनिक सिद्धांतों, विशेष रूप से सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों को व्यक्त करने की उनकी चिंता के आधार पर नैतिकता की एक प्रारंभिक परिभाषा प्रस्तुत करता है। दूसरा भाग पश्चिमी नैतिक दर्शन को आधार देने वाली मान्यताओं की जांच करता है, और सवाल उठाता है: क्या आधुनिक पश्चिमी दर्शन की दार्शनिक पूर्वधारणाएं हिंदू धर्म की पूर्वधारणाओं के अनुरूप हैं? यह निष्कर्ष निकालता है कि दोनों पूरी तरह से सहमत नहीं हैं, विशेष रूप से व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान के मुद्दे पर। तीसरा भाग हिंदू धर्म में उन क्षेत्रों का पता लगाता है जो पश्चिमी नैतिकतावादियों की चिंताओं के साथ विमर्शात्मक रूप से मेल खाते हैं, और समानता की सीमाओं की खोज करते हैं। चौथा समस्याग्रस्त क्षेत्रों की पहचान करता है, और सवाल उठाता है: क्या हिंदू धर्म के लिए सार्वभौमिक नैतिकता के विचार को त्याग दिया जाना चाहिए? पाँचवाँ भाग निष्कर्ष निकालता है कि ऐसा त्याग जल्दबाजी होगी, और हिंदू महाकाव्यों में उन अवधारणाओं की खोज शुरू करता है, जो नैतिकता की कुछ पश्चिमी धारणाओं के समान नहीं होने पर भी समानांतर हो सकती हैं।

नाथ, दुर्जोय. (2024) [6]। यह अध्ययन हमारे मन के अंदर की नैतिक बाधाओं और इन बाधाओं को दूर करने के उपायों को दर्शाता है। मैंने संस्कृत साहित्य के नाटकों में से एक प्रबोध चंद्रोदय में इसी शंका से बाहर निकलने का प्रयास किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय दर्शन की एक महत्वपूर्ण शाखा अद्वैत की स्पष्ट और सुसंगत व्याख्या प्रदान करना है, जिसे नाटक के नाटककार ने अपने पीछे रखा है। इससे हम एक तस्वीर पेश करेंगे कि हम नैतिक बाधाओं और मन के अन्य प्रभावों को कैसे दूर कर सकते हैं जो हमारे संज्ञान का उपभोग करते हैं। मैंने तुलनात्मक और गुणात्मक चर्चा के माध्यम से अध्ययन में इस मुद्दे को उजागर किया है।

अनुसंधान पद्धति

अनुसंधान डिज़ाइन: यह अनुसंधान गुणात्मक पद्धति पर आधारित होगा, जिसमें संस्कृत साहित्य के विभिन्न ग्रंथों का विश्लेषण किया जाएगा।

विषय विश्लेषण

- नैतिकता और धर्म की अवधारणाएँ: उपनिषदों और महाकाव्यों में नैतिकता और धर्म की अवधारणाओं का गहराई से अध्ययन किया जाएगा।
- सिद्धांतों की तुलना: उपनिषदों और महाकाव्यों में वर्णित नैतिकता और धर्म के सिद्धांतों की तुलना की जाएगी।

गुणात्मक विश्लेषण

- पारंपरिक विधियाँ: संस्कृत ग्रंथों के पाठ्यक्रम और उनके ऐतिहासिक संदर्भों का विश्लेषण किया जाएगा।
- वर्णनात्मक विश्लेषण: नैतिकता और धर्म के विभिन्न पहलुओं का वर्णन और विश्लेषण किया जाएगा।

डेटा संग्रह और विश्लेषण: ग्रंथों का विश्लेषण: उपनिषदों और महाकाव्यों के मूल पाठों का अध्ययन और उनका विश्लेषण किया जाएगा।

उपनिषदों का आचार-विचार

हिंदू मन के बारे में कहा गया है कि यह न्यूमैन के मन की तरह है, 'जब यह विश्लेषण करता है तो सूक्ष्म, जब यह विश्वास करता है तो सरल', निर्भयतापूर्वक और अथक तर्क के साथ अस्तित्व की सबसे गहन समस्याओं में प्रवेश करता है, फिर भी व्यावहारिक धर्म में असाधारण रूप से भोला है। हमने हिंदू मन को उसके विश्वास करने वाले मूड में देखा है, जो समझ से परे अनुष्ठान रूपों में सबसे तुच्छ चरणों के सर्वोच्च महत्व में विश्वास करता है। उपनिषदों में हम इसे उसके चिंतनशील मूड में देखते हैं। दोनों मूड कभी भी एक दूसरे से पूरी तरह स्वतंत्र नहीं होते हैं; एक शायद ही कभी दूसरे को पूरी तरह से बाहर करने के लिए मन पर कब्जा कर लेता है; क्योंकि हम ब्राह्मणों में भी दार्शनिक विचारों की कभी-कभी झलक पाते हैं, जबकि उपनिषदों के दर्शन के साथ हमें पौराणिक कथाएँ, अंधविश्वास और अनुष्ठान शिक्षाएँ मिलती हैं। फिर भी, हिंदू मन की विशेषता ये दो मनोवृत्तियां या प्रवृत्तियां हैं, और जिस प्रकार बाद के वेद और ब्राह्मण इनमें से एक के अध्ययन के लिए महान प्रारंभिक ग्रंथ हैं, उसी प्रकार उपनिषदें दूसरी के अध्ययन के लिए महान ग्रंथ हैं।

उपनिषदों की समस्या सबसे व्यापक और सबसे मौलिक दार्शनिक समस्या है - वास्तविकता की प्रकृति और अर्थ की। एक निश्चित अर्थ में नैतिक समस्या केवल संयोगवश ही उत्पन्न होती है, और हिंदू साहित्य में, भगवद-गीता के संभावित अपवाद के साथ, कहीं भी इसके अध्ययन के लिए हमारे पास अधिक महत्वपूर्ण डेटा नहीं है। इसके अलावा, उपनिषदों के दार्शनिक चिंतन का मूलतः धार्मिक महत्व है। यह केवल बौद्धिक अभ्यास में आनंद के कारण नहीं था कि इन विचारकों ने वास्तविकता की छिपी हुई गहराई का पता लगाने का बीड़ा उठाया। भारतीय मन निस्संदेह हमेशा अपने लिए चिंतन में आनंदित रहा है, लेकिन इसके लिए महान आवेग व्यावहारिक जरूरतों से आया, मुख्य रूप से शायद भौतिक

दुनिया की सीमितता और असंतोषजनकता की भावना से और एक अनुष्ठान धर्म की बुद्धि और हृदय की मांगों को पूरा करने में विफलता से। जिस तरह वास्तविकता की प्रकृति के बारे में अपने चिंतन में स्पिनोज़ा कुछ ऐसा खोजने की इच्छा से प्रेरित थे जो उन्हें 'अनंत काल तक निरंतर और सर्वोच्च आनंद' प्रदान करे, उसी तरह उपनिषदों के लेखक जीवन की बुराइयों से मुक्ति का साधन खोजने की इच्छा से प्रेरित थे। निम्न के जाल से मुक्ति और उच्चतम की ओर भागने की इच्छा थी; और खोज में वही धार्मिक चरित्र था। न ही यह तथ्य किसी भी तरह से जांच को अमान्य करता है। नैतिकता की कुछ आधुनिक पाठ्य-पुस्तकों में नैतिक अनुभव को कुछ ऐसा मानने की प्रवृत्ति है जिसका मानव अस्तित्व के व्यापक निहितार्थों के संदर्भ के बिना स्वयं अध्ययन किया जा सकता है। संपूर्ण नैतिक संरचना के लिए कुछ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को आधार के रूप में पर्याप्त माना जाता है, और एक ओर नैतिकता का धर्म से और दूसरी ओर तत्वमीमांसा से संबंध को अंतिम अध्यायों में संक्षेप में निपटाया जाता है, जैसे कि मानव आत्मा की वास्तविकता और प्रकृति, उसकी अमरता और ईश्वर से उसके संबंध की समस्याएं उच्चतम स्तर पर उन रेखाओं को निर्धारित करने वाली नहीं थीं जिनका मानव आचरण को पालन करना चाहिए। उपनिषदों में निहित नैतिक चिंतन के बारे में चाहे जो भी कहा जाए, कम से कम यह तो स्वीकार किया ही जाना चाहिए कि यह मानव अस्तित्व के व्यापक निहितार्थों को ध्यान में रखकर किया गया है।

भगवद्गीता का नया नीतिशास्त्र

हमने देखा है कि ऋग्वेद में यह देखा जा सकता है कि यदि धार्मिक विचारों की धारा को अन्य दिशाओं में मोड़ा न गया होता तो वास्तव में नैतिक धर्म की शुरुआत कैसे हो सकती थी। बाद के साहित्य में हमने नैतिकता को धर्म से लगभग पूर्ण रूप से अलग होते देखा है। यह अलगाव पूर्ण नहीं था, क्योंकि हमने उपनिषदों के अपने अध्ययन में देखा है कि उनकी नैतिक शिक्षा का कितना हिस्सा उनकी विशिष्ट आध्यात्मिक और धार्मिक स्थिति का परिणाम था, और आरंभिक भारतीय विचार के इतिहास में नैतिक सिद्धांत धार्मिक और दार्शनिक अवधारणाओं से विभिन्न तरीकों से प्रभावित थे। लेकिन भारत में प्रचलित सर्वेश्वरवादी दर्शन में नैतिकता के लिए सामान्य अर्थ में बहुत कम जगह थी। धर्म की उच्चतम उड़ानों में नैतिकता को आसानी से पार कर लिया गया था। नैतिकता के साथ-साथ अन्य भेद उस अनुभव में हल हो गए जिसमें व्यक्तिगत आत्मा ने परमात्मा के साथ अपनी एकता का एहसास किया।

हिंदू धर्म, हालांकि, हमेशा अपने अनुयायियों की जरूरतों के प्रति सजग रहा है, और मानव स्वभाव के विभिन्न पहलुओं की जरूरतों के प्रति भी, और यह व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करने में विफल नहीं रहा है। कानून की पुस्तकों में हमें व्यावहारिक जीवन के बारे में शिक्षा मिलती है, जिसमें लोग विभिन्न प्रकार के रिश्तों में प्रवेश करते हैं, और इसके विकास के सभी विभिन्न चरणों में। कानून के व्याख्याताओं का काम अंतिम प्रश्नों से निपटना नहीं है, और जैसा कि हमने देखा है, जब वे मानव गतिविधि की विभिन्न अभिव्यक्तियों के सापेक्ष मूल्यों का अनुमान लगाने का प्रयास करते हैं, तो वे खुद या एक-दूसरे का खंडन करते हैं। इसलिए, हालांकि कानूनी साहित्य एक अर्थ में हिंदू नैतिकता के बारे में जानकारी का हमारा सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है, यह मुख्य रूप से अप्रत्यक्ष रूप से हमें वास्तव में किए जाने वाले आचरण के रूपों का ज्ञान प्रदान करता है। क्योंकि यह देखना महत्वपूर्ण है कि कानून की पुस्तकों में बताए गए कर्तव्यों का व्यक्ति के अस्तित्व के वास्तविक लक्ष्य से बहुत दूर का संबंध है। दार्शनिक चिंतन ने जो विभिन्न दिशाएँ अपनाई हैं, उनमें यह विचार निरंतर बना हुआ है कि मनुष्य का सच्चा अस्तित्व सांसारिक क्रियाकलापों में साकार नहीं होता, कि मनुष्य, जहाँ तक वह किसी भी प्रकार के सीमित अनुभव में लीन है, वह अपने सच्चे व्यवसाय से चूक जाता है, वह भ्रमित और जाल में फँस जाता है, और उसका सच्चा लक्ष्य सीमित अस्तित्व के बंधनों से मुक्ति और निरपेक्ष के साथ अपनी पहचान की प्राप्ति में निहित है। तदनुसार, नैतिकता उस क्षेत्र से अनिवार्य रूप से भिन्न है जिसमें मनुष्य का सच्चा लक्ष्य प्राप्त होता है। विकास के एक निश्चित चरण में मनुष्यों के लिए इसका अपना मूल्य होता है, लेकिन जब कोई व्यक्ति उच्चतर अवस्था को प्राप्त कर लेता है तो नैतिकता बस नकार दी जाती है - वह अच्छाई और बुराई से ऊपर उठ जाता है। इसलिए, कानून की पुस्तकों में अच्छे आचरण के विभिन्न विवरण बहुत सटीकता के साथ निर्धारित किए गए हैं, लेकिन कोई यह सोचकर हैरान रह जाता है कि इन सबका अर्थ क्या है। धार्मिक प्रतिबंध, निस्संदेह, नैतिक कार्यों के लिए दिए जाते हैं, लेकिन यह तथ्य केवल उस धार्मिक स्थिति की आवश्यक असंतोषजनकता को स्पष्ट रूप से प्रकाश में लाता है, जो दो मानकों को स्वीकार करती है जो न केवल उच्च से निम्न के रूप में एक दूसरे से संबंधित हैं, बल्कि एक दूसरे का विरोधाभासी भी हैं।

पश्चिमी छात्रों को नैतिकता के बारे में इस तरह का दृष्टिकोण पूरी तरह से असंतोषजनक लगता है। स्वर्गीय प्रोफेसर जेम्स के एक वाक्यांश का उपयोग करने के लिए, नैतिक संघर्ष 'एक वास्तविक लड़ाई की तरह लगता है'। यदि नैतिक से उच्च क्रम के अनुभव हैं, तो वे नैतिक से परे हैं, न कि केवल नकार के माध्यम से, बल्कि पूर्ति के माध्यम से। भारत में बहुत पहले से ही ऐसे विचारक रहे होंगे जिन्होंने महसूस किया होगा कि नैतिक अनुभव में वे दार्शनिकों की शिक्षाओं की तार्किक व्याख्या की तुलना में वास्तविकता के अधिक निकट थे। उपनिषदों में भी नैतिक भेदों की वैधता पर अक्सर जोर दिया जाता है। लेकिन, सबसे अच्छे रूप में, अच्छे कर्म केवल आत्मा को उस स्थिति की ओर ले जाने में मदद करते हैं जहाँ से मुक्ति की प्राप्ति आसान हो जाती है। वे पुण्य के अधिग्रहण में योगदान देते हैं, लेकिन किसी भी तरह से कर्म के चक्र को तोड़ने में नहीं, जो कि सच्चा लक्ष्य है। कहने का तात्पर्य यह है कि नैतिकता, सख्ती से कहें तो, मुक्ति के लिए गैर-आवश्यक है; उच्चतम धार्मिक अनुभव में इसका कोई स्थान नहीं है।

नैतिकता को अधिक गंभीरता से लेने की प्रवृत्ति शायद सबसे पहले और सबसे स्पष्ट रूप से भगवद गीता में व्यक्त हुई। यह महान संस्कृत महाकाव्य महाभारत में एक अंतर्वेशन के रूप में हमारे पास आया है, जहाँ इसे कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में अर्जुन और कृष्ण के बीच हुई बातचीत के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कृष्ण अर्जुन के सारथी के रूप में काम कर रहे थे, और युद्ध में शामिल होने से पहले, वध की संभावना से भयभीत होकर, अर्जुन ने रुककर कृष्ण से सवाल पूछा कि क्या अपने रिश्तेदारों का वध करना सही था।

इस कार्य की उत्पत्ति के बारे में कई प्रश्न उठाए गए हैं, और इनमें से अधिकांश का अभी तक कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया गया है; लेकिन प्रोफेसर गार्बे ने कुछ सुझाव दिए हैं, जिन्हें नवीनतम विद्वानों ने खारिज कर दिया है, लेकिन उनका यह बड़ा महत्व है कि उन्होंने कार्य में चल रहे विरोधाभासों को स्पष्ट रूप से सामने लाने का काम किया है। संक्षेप में गार्बे का मत है कि भगवद्गीता जिस रूप में अब हमारे पास है, वह एक मिश्रित रचना है। मूल कार्य जो संभवतः ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में रचा गया था, और जो

भागवतों की आस्था का प्रतिनिधित्व करता था, जिसे सांख्य-योग के तत्वों के समावेश द्वारा संशोधित किया गया था, संभवतः दूसरी शताब्दी ईस्वी में वेदांत सिद्धांत द्वारा आच्छादित किया गया था, जिसका परिणाम यह हुआ कि हमारे पास जो कार्य अब है, उसमें आस्तिक और सर्वेश्वरवादी विचारों का एक असंगत भ्रम है। उनका मानना है कि बाद के परिवर्धन को मूल कार्य से अलग करना काफी आसान है, जिसमें हमारे पास लेखक के विशिष्ट दृष्टिकोण से भागवत सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है। अगर गार्बे का सिद्धांत सही है, तो भगवद्गीता की शिक्षा तुलनात्मक रूप से सुसंगत और बोधगम्य हो जाती है। अगर यह गलत है, तो कम से कम उन्होंने हमारे लिए यह सेवा की है कि उन्होंने हमारे लिए किसी भी पूर्ववर्ती लेखक की तुलना में कहीं अधिक गहनता से इस कार्य का विश्लेषण किया है, ताकि हमें इसमें शामिल विभिन्न तत्वों को स्पष्ट रूप से समझा जा सके, ताकि हम उन्हें विचार की वास्तविक प्रवृत्तियों के रूप में अलग-अलग करके अध्ययन कर सकें। कम से कम इसी दृष्टिकोण से, हम भगवद्गीता की नैतिक शिक्षा की जांच करने का प्रस्ताव रखते हैं, और इसकी मूल शिक्षा को गार्बे के शब्दों में 'सांख्य-योग दर्शन पर आधारित कृष्णवाद' के रूप में देखते हैं।

भक्ति आंदोलन के नैतिक निहितार्थ

अब यह आवश्यक है कि हम पीछे लौटें और विचार की कुछ धाराओं पर ध्यान दें जिन्हें हमने अब तक काफी हद तक अनदेखा किया है। ईसा युग से पहले की चार या पाँच शताब्दियों के दौरान अवतार का विचार आकार ले रहा था, जिसके परिणामस्वरूप विष्णु के विभिन्न अवतारों को पूजा की वस्तु के रूप में मान्यता मिली। महाभारत और रामायण जैसे महान महाकाव्य हमें इस आंदोलन की प्रगति दिखाते हैं, और बाद में, पाँचवीं या छठी शताब्दी ई. से, पुराणों के रूप में जाने जाने वाले लेखन सामने आने लगे, जिन्होंने अपनी सामग्री मुख्य रूप से महाकाव्यों से ली थी, और जो सांप्रदायिक रचनाएँ थीं, जिनकी रचना उनके विशेष देवताओं को महिमामंडित करने के उद्देश्य से की गई थी। यह विकास, कम से कम कुछ हद तक, हिंदू धर्म पर बौद्ध धर्म के प्रभाव का परिणाम था। लोगों के धर्म के रूप में बौद्ध धर्म की उपस्थिति में खुद को बनाए रखने के लिए, हिंदू धर्म को खुद को संशोधित करना पड़ा, और इसमें हुए अन्य परिवर्तनों के साथ-साथ आदिवासी पंथों से लिए गए तत्वों को भी इसमें जगह मिली। धार्मिक दृष्टिकोण से भी शक्ति पूजा का विशेष महत्व है, जिसमें भगवान की शक्ति या ऊर्जा की पूजा की जाती है, जिसे उनकी पत्नी के रूप में माना जाता है, जो शैव संप्रदायवाद का एक विशेष विकास था।

लेकिन विकास की एक बहुत ही महत्वपूर्ण रेखा है जिसे हम इस तरह से खारिज नहीं कर सकते। इसे भक्ति आंदोलन कहा जा सकता है। भक्ति शब्द संस्कृत मूल भज से लिया गया है, जिसका एक प्रयोग में अर्थ है 'आराधना करना'। इसलिए इसका अर्थ है 'आराधना', और इसके अधिक विशिष्ट प्रयोग में, 'ईश्वर की आराधना या प्रेमपूर्ण भक्ति'। इस शब्द का अपने आप में एक लंबा इतिहास है, और विचार का इतिहास इससे भी बहुत लंबा है। साहित्य में भक्ति की पहली महान निश्चित प्रस्तुतियाँ महाभारत, भगवद-गीता और नारायणीय खंड के रूप में जानी जाती हैं।

पौराणिक पक्ष में बालक कृष्ण की ग्वालिनों के साथ साहसिक कारनामों की कहानियों ने धार्मिक आंदोलन की दिशा पर बहुत प्रभाव डाला, और विशेष रूप से कृष्ण की प्रेमिका राधा पूजा की एक महत्वपूर्ण वस्तु बन गई। बाद में राम को भगवान के रूप में ऊंचा किया गया और उनकी पूजा की गई, और बाद की भक्ति का पूरा इतिहास कृष्ण और राधा की पूजा के विभिन्न रूपों से जुड़ा हुआ है, और राम की, कभी-कभी सीता के साथ, पूजा की जाती है। दार्शनिक पक्ष में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य रामानुज द्वारा दिए गए प्राचीन दार्शनिक ग्रंथों की नई व्याख्या है, जिन्होंने 11वीं शताब्दी में भक्ति के लिए एक बौद्धिक आधार प्रदान किया, जिसे अद्वैतवादी दर्शन ने बहुत कमजोर करने का काम किया था। यह वह प्रभाव था जो हिंदू सुधार के नाम से जाना जाता है, और 'सुधार के चार चर्चों' में हमें उस नई ताकत और जीवन शक्ति के प्रमाण मिलते हैं जो भक्ति की भावना को प्रदान की गई थी। इन चर्चों को क्रमशः इस प्रकार जाना जाता है: -

- रामानुज का श्री-सम्प्रदाय,
- माधव का ब्रह्म-सम्प्रदाय,
- विष्णुस्वामिन का रुद्र-संप्रदाय, और
- निम्बार्क का सनकादि-सम्प्रदाय।

ये 'चर्च' अलग-अलग धार्मिक आधारों पर आधारित हैं। पहला एक योग्य अद्वैतवाद-विशिष्टाद्वैत, दूसरा द्वैतवाद, तीसरा शुद्ध अद्वैतवाद - शुद्धाद्वैत, और चौथा एक दर्शन है जो अद्वैतवाद और बहुलवाद का एक विचित्र मिश्रण है। फिर भी सभी कुछ बिंदुओं पर सहमत हैं। वे ईश्वर में किसी तरह से व्यक्तिगत विश्वास रखते हैं। वे यह मानने में भी सहमत हैं कि आत्मा अनिवार्य रूप से व्यक्तिगत है और उसमें अविभाज्य व्यक्तित्व है। यह अमर भी है, जो अपना सच्चा अस्तित्व सर्वोच्च में लीन होने में नहीं, बल्कि उसके साथ अमिट प्रेम के संबंध में पाता है। तदनुसार सभी माया के सिद्धांत को अस्वीकार करने में सहमत हैं।

सर आर. जी. भंडारकर ने विभिन्न वैष्णव प्रणालियों के आपसी संबंधों के बारे में जो कुछ कहा जाना चाहिए, उसका सारांश निम्नलिखित अनुच्छेद में अच्छी तरह से प्रस्तुत किया है:

इन विभिन्न वैष्णव प्रणालियों के बीच संपर्क बिंदु यह है कि उनके आध्यात्मिक तत्व मूलतः भगवद्गीता से लिए गए हैं, कि वासुदेव सर्वोच्च सत्ता के नाम के रूप में सभी की पृष्ठभूमि में खड़े हैं, और आध्यात्मिक अद्वैतवाद और संसार-भ्रम की वे समान रूप से निंदा करते हैं। मतभेद इस बात से उत्पन्न होते हैं कि वे विभिन्न आध्यात्मिक सिद्धांतों को अलग-अलग महत्व देते हैं; वे वासुदेववाद के साथ मिश्रित तीन तत्वों में से किसी एक को प्रमुखता देते हैं; वे जो आध्यात्मिक सिद्धांत स्थापित करते हैं; और वे अनुष्ठान जो वे अपने अनुयायियों पर थोपते हैं। भगवद्गीता को बाद के समय में पंचरात्र संहिताओं और विष्णु और भागवत जैसे पुराणों और उसी प्रकार के अन्य बाद के कार्यों द्वारा पूरक बनाया गया। इनमें कभी-कभी कुछ आवश्यक सिद्धांतों को स्पष्ट किया गया, अनुष्ठान निर्धारित किए गए, और अपनी विशेष शिक्षाओं के महत्व को बढ़ाने और उन्हें आकर्षक बनाने के लिए पौराणिक बातों का एक विशाल समूह एक साथ लाया गया।

आधुनिक हिंदू चिंतन में नैतिक प्रवृत्तियाँ

इस अध्ययन के दौरान हम जिस नैतिक विचार पर विचार कर रहे हैं, उसका अधिकांश भाग निश्चित और स्थिर चरित्र की सामाजिक व्यवस्था को ध्यान में रखकर किया गया है। मुख्य रूप से इसी कारण से नैतिकता की अधिक मौलिक समस्याएं उभर कर सामने आईं, लेकिन विचारकों के दिमाग पर उनका बहुत कम जोर था। लेकिन आधुनिक समय में विचारशील लोगों को ऐसी समस्याओं का सामना करने के लिए मजबूर होना पड़ा है जो नैतिक और सामाजिक जीवन की नींव के बहुत करीब हैं। परिस्थितियों के

मजबूर बल ने उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया है।
पश्चिमी विचार और व्यवहार ने भारत के लोगों के विचार और व्यवहार पर अनिवार्य रूप से गहरा प्रभाव डाला है। ऐसे विषय पर लिखते समय अतिशयोक्ति करना संभव है, लेकिन यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पश्चिम के साथ संपर्क, विशेष रूप से पिछले शताब्दी के दौरान इस संपर्क ने जो रूप लिया है, उसका प्रभाव भारत के शिक्षित वर्ग के बहुत से लोगों के हितों और आकांक्षाओं को एक नई दिशा देने में हुआ है। अपने लंबे इतिहास में हिंदुओं को एक से अधिक विदेशी सभ्यताओं के संपर्क में लाया गया है, और यह संपर्क अपने परिणामों के बिना नहीं रहा है। लेकिन परिणामों ने आमतौर पर सामाजिक या नैतिक आदर्शों के गहन परिवर्तन का रूप नहीं लिया है। हिंदू धर्म हमेशा कैथोलिक से अधिक रहा है, और इसने विभिन्न और असंगत प्रतीत होने वाले विचारों और प्रथाओं को आत्मसात करने की अद्भुत क्षमता दिखाई है। इसकी तुलना एक पुरानी अव्यवस्थित इमारत से की गई है, जिसके मूल ढांचे में लगातार वृद्धि की गई है, और जिसमें अनिश्चित काल तक और भी वृद्धि की जा सकती है। लेकिन सभी परिवर्तनों के बीच मुख्य संरचना खड़ी रही है, और प्राचीन काल में इस पर पड़ने वाले प्रभावों में से कोई भी इसकी नींव को हिलाने के लिए शक्तिशाली नहीं था। एक समय ऐसा लगा कि बौद्ध धर्म ऐसा करेगा, लेकिन उस प्रभाव के कारण कोई मौलिक पुनर्निर्माण नहीं हुआ। यहां तक कि मुसलमान धर्म, जो भारत में इतने लंबे समय से और इतनी मजबूती से स्थापित है, ने भी हिंदू धर्म पर तुलनात्मक रूप से बहुत कम प्रभाव डाला है। इसने हिंदू धर्म से बड़ी संख्या में लोगों को धर्मांतरित किया है, लेकिन इसने हिंदू विचार और व्यवहार के ढांचे में कोई बड़ा बदलाव नहीं किया है।
भारत ने कई अन्य विस्फोटों के सामने घुटने टेक दिए हैं, और यह तर्कसंगत रूप से माना जा सकता है कि पिछली शताब्दी के दौरान इसे छूने वाले पश्चिमी प्रभावों ने केवल सतही रूप से ऐसा किया है। इस तरह के तर्क को हठधर्मिता से खारिज नहीं किया जा सकता है, लेकिन दूसरी ओर यह इंगित किया जा सकता है कि आधुनिक समय में पूरी दुनिया इतनी एकीकृत हो गई है कि किसी भी व्यक्ति के लिए व्यापक दुनिया में काम करने वाले प्रभावों के संचालन से खुद को अलग करना मुश्किल लगता है। इसलिए हम यह मानने में उचित हैं कि आधुनिक समय में इतने सारे हिंदुओं के दृष्टिकोण में जो परिवर्तन हुए हैं, वे केवल विचारों के क्षणिक तरीकों की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वे उन प्रभावों के संचालन का प्रभाव हैं जो पश्चिम के देशों के साथ भारत के राजनीतिक संबंधों में चाहे जो भी परिवर्तन हो, काम करना जारी रखेंगे। क्योंकि भारत कभी भी उन सांस्कृतिक प्रभावों से खुद को अलग नहीं कर सकता है जो पूरे विश्व में काम कर रहे हैं।

निष्कर्ष

दोनों महाकाव्य मूलतः उपदेशात्मक और नैतिक भावना से युक्त हैं। इसलिए उन्हें धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र माना जाता है। वे शासकों, राजनेताओं, विधि-निर्माताओं और चारों जातियों और जीवन के चरणों से संबंधित व्यक्तियों के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं। दोनों ने एक ही संदेश का प्रचार करने का प्रयास किया है: यह पाप नहीं बल्कि पुण्य है, असत्य नहीं बल्कि सत्य है, जो अंततः जीतता है और प्रबल होता है। महाकाव्यों में घरेलू और सामाजिक क्षेत्रों में खुशी, सद्भाव और समझ के जो चित्र खींचे गए हैं, वे आदर्श हैं। माता-पिता का स्नेह, भाइयों की वफादारी, पत्नियों का प्यार, बच्चों की आज्ञाकारिता, इत्यादि, पाठक के मन पर एक अनूठा प्रभाव डालते हैं। 'वास्तव में,' मोनियर विलियम्स ने कहा, 'घरेलू स्नेह के दृश्यों को चित्रित करने और उन सार्वभौमिक भावनाओं और भावनाओं को व्यक्त करने में, जो सभी समय और सभी स्थानों में मानव स्वभाव से संबंधित हैं, संस्कृत महाकाव्य काव्य ग्रीक महाकाव्यों से भी बेजोड़ है। वास्तव में, महाकाव्य प्राचीन भारत के राष्ट्रीय चरित्र, उसकी बुद्धिमत्ता, उसकी सुंदरता और उसकी शक्ति को दर्शाते हैं। इसलिए, उन्हें भारत का 'राष्ट्रीय महाकाव्य', भारत का 'गर्व और खजाना' कहना उचित ही है। दुनिया के दो अन्य महान महाकाव्यों, इलियड और ओडिसी को ध्यान में रखते हुए, यह कहा जा सकता है कि मानव मन के स्मारकों और प्राचीन काल में मानव जीवन और व्यवहार के दस्तावेजों के रूप में, भारतीय महाकाव्य अपने यूरोपीय समकक्षों से कम दिलचस्प नहीं हैं। सुदूर प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक भारतीय लोगों के जीवन और साहित्य पर इन दो महान महाकाव्यों का बहुत प्रभाव रहा है। वास्तव में, राम की कहानी और महाभारत के कई प्रसंग स्टॉक-विषय हैं, जो बाद के साहित्य में बार-बार दिखाई देते हैं। रामायण और महाभारत के रूपांकनों के आधार पर कई पेंटिंग, और स्थापत्य और मूर्तिकला के टुकड़े भी डिजाइन किए गए हैं। शिलालेखों और सिक्कों पर भी महाकाव्यों का प्रभाव काफी है। वे इतने लोकप्रिय और प्रसिद्ध हुए कि वे भारत की सीमाओं से बहुत दूर, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व के देशों में पहुँच गए, और काफी हद तक उनकी कला और साहित्य को आकार दिया।

संदर्भ

1. पंडित भ. एथिकल थॉट्स इन मेजर उपनिषद. Journal of Critical Reviews. 2018;5:107-109।
2. मित्रा ध. हिंदू ज्ञान प्रणाली में मूल्य और मानव नैतिकता: समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य. 2025;72:190-200।
3. यादव आके, चौधरी अ, सिंह न, शुक्ला म. प्राचीन भारतीय धार्मिक ग्रंथों के मनोवैज्ञानिक पहलू. International Journal of Indian Psychology; 2024, 12. DOI: 10.25215/1203.186।
4. पटेल प, चौहान ध. महाकाव्य रामायण में मानवीय मूल्यों की खोज. Journal of General Education and Humanities. 2025;4:287-296. DOI: 10.58421/gehu.v4i2.357।
5. ढांड आ. नैतिकता का धर्म, धर्म की नैतिकता: हिंदू धर्म के आदर्शों पर प्रश्नोत्तरी. Journal of Religious Ethics. 2002;30:347-372. DOI: 10.1111/1467-9795.00113।
6. नाथ दु. कृष्ण मिश्रा का शास्त्रीय संस्कृत नाटक "प्रबोध चंद्रोदय" नैतिक बाधाओं का दार्शनिक समाधान. Journal of Creative Writing. 2024;8:55-64. DOI: 10.70771/jocw.v8i1.89।
7. पाठक कृ. उपनिषदिक ज्ञान का सार और शोपेनहावर के जीवन का सांत्वना; 2017. DOI: 10.1007/978-981-10-5954-4_6।
8. मिश्रा सं. वैदिक और उपनिषद चिंतन में दृश्य कला की भूमिका - एक ऐतिहासिक विश्लेषण. Shodhkosh: Journal of Visual and Performing Arts; 2024, 5. DOI: 10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.3478।
9. खान एलए. सिंधु घाटी के धर्मग्रंथ के रूप में ऋग्वेद: सिंधु घाटी के एक प्रोटो-इस्लामिक धर्मग्रंथ के रूप में ऋग्वेद; 2025. DOI: 10.13140/RG.2.2.14983.71841।
10. घोष ब, बागची स. हिंदू धर्म-प्रकृति और भविष्य का धर्म; 2017।

11. शॉ ज. प्राचीन भारत में धर्म, 'प्रकृति' और पर्यावरण नैतिकता: प्रारंभिक बौद्ध और हिंदू संदर्भों में मानव: गैर-मानव पीड़ा और कल्याण के पुरातत्व. World Archaeology. 2017;48:1-27.
DOI: 10.1080/00438243.2016.1250671 l

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.